साहित्यिक अनुवाद और अनुवादकों संबंधी क्युबॅक घोषणापत्र

१. साहित्यिक अनुवाद जोश और उमंगयुक्त कला हैं। उदारता के मूल्यों को प्रोत्साहित करते हुए, शांति और मुक्ति के पक्ष में और अन्याय, असहिष्णुता और प्रकाशन-नियंत्रण के विरोधमें कार्यरत अनुवाद विश्व के साथ संवाद का आहवान देता हैं।

२. अनुवाद के संदर्भ में सभी संस्कृतियां एक समान नहीं हैं। कुछ संस्कृतियां अपनी मरज़ीसे अनुवाद करती है जबकी कुछ करतव्य के रूप में करती हैं। अनुवाद भाषाओं और संस्कृतियों की सुरक्षा की चाबी हैं।

३. मूल लेखकों और कृतियों के प्रति सम्मान रखते हुए अनुवादकों खुद सर्जक हैं। उनका आशय केवल साहित्यिक कृति की पुन:प्रस्तुती ही नहीं परंतु उसे आगे बढाना, विश्व में उसकी मौज़ूदगी का प्रसार करना होता हैं। अनुवादकों केवल संदेशवाहक नहीं होते; दुसरों की आवाज़ बनने के बावजूद उनकी आवाज़ उनकी खुद की होती हैं। खास कर के, सीमांत लेखकों, साहित्यिक शैलीओं और सामाजीक समूहों को वफादार रह कर सांस्कृतिक विविघता के समर्थन में कार्य करतें हैं।

४. अनुवादकों के अधिकारों की सुरक्षा अनिवार्य हैं। सरकारों, प्रकाशकों, प्रचार-प्रसार माध्यमों, नियोजकों - सभी को अनुवादकों के दर्जे एवं ज़रूरतों का सम्मान करना चाहिए। उनके नाम को प्राघान्य देना चाहिए और न्यायोचित पुरस्कार एवं उनके सम्मान को हानि ना पहुंचे वैसे वातावरण में उनहें कार्य करने की सुविधा (मुद्रण एवं डिजिटल माध्यमों के सभी प्रकारों समेत) सुनिश्चित करनी चाहिए।

५. अनुवादकों की शारिरीक सुरक्षा एवं वाणी स्वतंत्रता को निरंतर सुनिश्चित करना चाहिए।

६. विशेष कौशल एवं ज्ञान से सुसज्जित सर्जानात्मक लेखकों होते हुए अनुवादकों के सम्मान को निश्चित करना चाहिए और उनके कार्य संबंधी हर प्रश्न के संदर्भ में उनका संपर्क करना चाहिए। अनुवाद उनका होते हैं जिनहोंने अनुवाद किया हैं।

(शॅरी सायमन के अंग्रेज़ी अनुवाद पर से अनुवाद: रूपाली बर्क)